**E-Content for student of Patliputra University Patna Bihar**

**subject -Hindi Hons**

**Course-BA H part-3 paper-6,unit-3**

**Topic- भ्रांतिमान,संदेह और विरोधाभास अलंकारों के लक्षण और उदाहरण स्पष्ट करें।**

**प्रस्तुतकर्ता-डॉ प्रफुल्ल कुमार,एसोसिएट प्रोफेसर,आर आर एस कॉलेज मोकामा,पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना।**

**1-भ्रांतिमान अलंकार-**

**लक्षण** - सादृश्य के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लेना भ्रांतिमान अलंकार है। भ्रांति का अर्थ है धोखा अर्थात् भ्रांतिमान का अर्थ हुआ धोखे से युक्त। दो वस्तुओं में जब दूरी नजदीकी या ज्ञानेंद्रियों की असमर्थता के कारण भ्रम पैदा हो तो वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है । रस्सी को देखकर साँप का भ्रम या फिर किसी कागज के टुकड़े को देखकर सिक्का का भ्रम होना इसके उदाहरण होंगे। स्पष्टता के लिए साकेत की यह पंक्तियाँ-

“ **नाक का मोती अधर की कान्ति से। बीज दाड़िम का समझ कर भ्रांति से। देख उसको ही हुआ शुक मौन है।सोचता है अन्य शुक यह कौन है।”**

उर्मिला के नाक का मोती अधरों की कान्ति से श्वेत होकर भी लाल हो गया है। अतः नुकीला नाक का सौंदर्य दूसरे शुक का भ्रम पैदा कर रहा है।अतः यहाँ भ्रांतिमान अलंकार है।

**2-सन्देह अलंकार** **–**

**लक्षण-** उपमेय में उपमान का संशय संदेह अलंकार है। साहित्य दर्पण में लिखा गया है- “**संदेह: प्रकृतेऽन्यस्य संशय: प्रतिभोत्थित:।”**

दो वस्तुओं की भावना में जहाँ निर्णय कर पाना कठिन हो। जैसे यह सीप है या चाँदी, यह ठूँठ है या मनुष्य , ऐसा संदेह हो तो उसे संदेह अलंकार कहेंगे।

उदाहरण- “**सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है,**

**कि सारी ही की नारी है**

**कि नारी ही की सारी है।**

यहाँ सारी और नारी दोनों में निर्णय कर पाना कठिन हो गया है। अतः यह संदेह होने के कारण संदेश अलंकार है।

**3-विरोधाभास अलंकार** –

दो वस्तुओं में विरोध न रहने पर भी विरोध की प्रतीति विरोधाभास अलंकार है।

**“आभासत्वे विरोधस्य विरोधाभास इस्यते** ।” विरोधाभास= विरोध+आभास=विरोध की झलक।

**उदाहरण** -

–“**भर लाऊँ सीपी में सागर प्रिय। मेरी अब हार विजय क्या ?”-** महादेवी।

यहाँ सीपी में सागर का भरना विरोध का आभास है। क्योंकि यह असंभव है। अतः विरोधाभास अलंकार है।

\*\*\*\*\*